ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

न क्वेयं यथा त्वम्। सामवेद 203

हे प्रभो तुझ जैसा काई नहीं है। आप अनुपम हैं।
O God ! Verily there is none like you. You are matchless.

वर्ष 37, अंक 38 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 8 सितम्बर, 2014 से रविवार 14 सितम्बर, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

133वें जन्मदिवस
(6 सितम्बर) पर पुण्य स्मरण

आर्यसमाज का वेद विषयक दृष्टिकोण

वैदिक विद्वान् शिरोमणि पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय जी के 133वें जन्मदिवस (6 सितम्बर) पर उनके उद्गारों को आपके समस्त 67 वर्ष के उपरान्त पुन: श्रद्धांजलि के रूप में प्रस्तत किया जा रहा है। उनका यह लेख सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख पत्र 'सार्वदेशिक साप्ताहिक' में मई, 1947 में प्रकाशित हुआ था। ज्ञातव्य है कि पं. गंगा प्रसाद जी उपाध्याय ने सार्वदेशिक सभा के मन्त्री पद को भी सुशोभित किया था। उनका पुण्य स्मरण भी हमारे लिए प्रेरणा एक प्रेरणा ही है। - सम्पादक

– पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

श्री युत पं० जवाहरलाल जी नेहरू नें अभी हाल ही में एक उत्तम पुस्तक लिखी है जिसका नाम है डिस्कवरी आफ इण्डिया (Discovery of India) उसमें अनेक उत्तम-उत्तम बातों के अतिरिक्त आर्य समाज और वेदों के विषय में भी दो उल्लेखनीय वाक्य है।

(1) Many Hindus look upon the Vedas as revealed scriptures. This seems to me to be peculiarly unfor-tunate, for thus we miss their real significance the unfolding of the human mind in the earliest stages of thought . (P-78)

(2) Its slogan was back to the Vedas this slogan really meant an elimination of development of the Aryan faith since the Vedas. (P-398)

इन वाक्यों का अनुवाद

(१) बहुत से हिंदू वेदों को ईश्वर कृत मानते है। मैं इसको बड़ा दुर्भाग्य समझता हूँ। क्योंकि इस से वेदों की वास्तविक उपयोगिता जाती रहती है अर्थात् विचार के आरंभ काल में मानवी मस्तिष्क ने कितना विश्वास किया।

(२) (आर्य समाज) ने घोषणा की कि 'वेदों की ओर लौटो' इस घोषणा का अर्थ यह है कि वेदों के काल से लेकर आर्य धर्म में जो विकास हुआ उसका परित्याग कर दिया जाय।

इन दोनों वाक्यों का एक दूसरे से सम्बन्ध है। अर्थ प्राय: एक ही है। अर्थात् वेदों की यह उपयोगिता तो है कि संसार के आरंभ काल में मानवी मस्तिष्क ने जो उन्नति की, उसका पता लग जाय। परन्तु यदि हम वेदों को ईश्वर कृत मान लें तो वेद आज भी आचरण करने योग्य पुस्तक सिद्ध हो जाते है। ऋषि दयानन्द का दृष्टि कोण वेदों के विषय मे श्री पं० जवाहरलाल जी से भिन्न था। और आजकल के संस्कृतज्ञों का लगभग वही दृष्टि कोण है जो पं० जवाहरलाल जी का। परन्तु यह तो निश्चित ही है कि स्वामी दयानन्द का दृष्टि कोण वही है जो प्राचीन ऋषियों का है। यहाँ तक कि भी शंकराचार्य जी आदि मध्यकालीन आचार्य भी वेदों को ईश्वर कृत ही मानते आये है। श्री शंकर स्वामी ने बौद्धों का खण्डन भी इसीलिये किया था कि वे अति को स्वत: प्रमाण मानते हैं। वे लिखते है कि वेद सूर्यवत् स्वत: प्रमाण है। अन्य शास्त्रों को उन्होंने स्मृति की कोटि में गिना है जो परत: प्रमाण है।

पं० जवाहरलाल जी का कहना है कि हम वेदो का मान तो करते है परन्तु इस आचरण पर चलने के लिये तैयार नही। दृष्टान्त के तौर पर आप आज स्टीवेन्सन के रॉकेट नामक इंजन को लीजिये। यह सबसे पहला इंजन था। रेल गाड़ी के इतिहास में जार्ज स्टीवेन्सन का नाम अमर रहेगा और रॉकेट को लोग बड़े सम्मान से याद करते हैं क्योंकि जितने इंजन आजकल चल रहे हैं या भविष्य में चलेंगे उन सब का आदि पुरुष (लकड़ दादा) रॉकेट था। परन्तु कोई इंजन चलाने वाला आज रेल में रॉकेट को लगाने के लिए तैयार न होगा। रॉकेट इंजनों का पूर्वज तो है परन्तु विकसित नही है। आजकल उन्नत करते करते इंजनो में बहुत बड़ा सुधार हो गया है। यही हाल

– शेष पृष्ट 4 पर

विशेष सम्पादकीय

तर्पण एवं श्राद्ध : मात्र 15 दिनों के लिए?

जिस प्रकार संसार में सूर्य उदय होकर सारे अन्धकार को नष्ट कर प्रकाश फैलाता है। इस प्रकार इसी दु:खी, आर्त्त, व्यक्त, एवं अविद्या से ग्रस्त इस आर्य जाति के लिए महानतम वेद रूपी विद्या का प्रकाश लेकर महर्षि दयानन्द का उद्भव हुआ। जिस समय भारत अपने भयंकर दुर्दिनों से पीड़ित मृत प्राय: हो रहा था। उस समय ज्ञानरुपी संजीवनी लेकर उस युग के निर्माता आध्यात्मिक वैद्य बनकर उपस्थित हुए। और ऐसे भयंकर विषधर जो अपने विष के भय से भोली जनता से यथेष्ट दुग्ध पान कर रहे थे और अपने विष को बढ़ा रहे थे। यह उक्ति एक तो विदेशी आक्रान्ताओं की ओर इशारा करती है दूसरी ओर धर्म के तथाकथित ठेकेदारों की ओर इशारा करती है। आज मैं उस ओर जाना नहीं चाहता केवल धर्म में आए विकार की ओर आपका ध्यान चाहता हूं।

आज का विषय है 'तर्पण और श्राद्ध' जिसका वास्तविक एवं उदात्त चित्रण महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ 'पञ्च महा यज्ञ-विधि' में किया है। ऋषि ने पञ्चमहा यज्ञों का विधान प्रत्येक गृहस्थ के लिए किया है। जिनमें तृत्तीय: पितृमहा यज्ञ' हैं। महर्षि लिखते है-

"तस्य द्वौ भेदौ स्त: एकस्तर्पणाख्यो, द्वितीय: श्राद्धाख्यश्च। येन कर्मणा विदुषो देवानृषीन् पितृंश्च तर्पयन्ति सुखयन्ति तत् तर्पणम्। तथा यत्तेषां श्रद्धया सेवनं क्रियते तत् श्राद्धं वेदितव्यम्।"

अर्थात् पितृयज्ञ के दो भेद हैं- एक तर्पण दूसरा श्राद्ध। जिस कर्मों से विद्वान् रूप देव, ऋषि और पितरों (पिता-माता- दादा-दादी-व अन्य) को सुख युक्त करते हैं, उसे तर्पण कहते हैं। उसी प्रकार जो उन लोगों का श्रद्धा से सेवन करना है, सो श्राद्ध कहलाता है। आगे ऋषि कहते है कि- 'यह तर्पणादि कर्म जो प्रत्यक्ष (विद्यमान) है उन्हीं में घटता हैं, मृतकों में नहीं, क्योंकि उनकी प्राप्ति और उनका प्रत्यक्ष होना दुर्लभ है। इसी से उनकी सेवा भी किसी प्रकार से नहीं हो सकती।

– शेष पृष्ट 8 पर

संस्कृत रक्षण के लिए आरम्भ की गई एक महत्त्वपूर्ण पहल का एक वर्ष पूर्ण

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा संचालित गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् का

प्रथम वार्षिकोत्सव, गुरु विरजानन्द दिवस एवं वेदारम्भ संस्कार समारोह

रविवार
21 सितम्बर, 2014

समय
सायं: 3 से 6:30 बजे

स्थान : आर्यसमाज आनन्द विहार
एल ब्लाक, हरि नगर नई दिल्ली

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं एवं संस्कृतकुलम् के ब्रह्मचारियों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

वेद-स्वाध्याय

ज्ञान और कर्म का प्रेरक परमात्मा

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति तस्मै त्वा युनक्ति। कर्मणे वां वेषाय वाम्।। यजुर्वेद : १/6

अर्थ—**(कः)** कौन **(त्वा)** तुझे अच्छे काम सत्य, धर्म, परोपकार के लिये **(युनक्ति)** आज्ञा देता है **(सः)** वह जगदीश्वर तुमको विद्यादि शुभ गुणों को प्राप्त करने के लिये **(युनक्ति)** आज्ञा या प्रेरणा देता है। **(कस्मै त्वा युनक्ति)** वह परमेश्वर किस प्रयोजन के लिये तुझे नियुक्त करता है **(तस्मै त्वा युनक्ति)** पूर्वोक्त सत्य, धर्म-प्रचार और कर्त्तव्य-पालन के लिये तुझे नियुक्त करता है। हे स्त्री-पुरुषो! **(कर्मणे)** श्रेष्ठ कर्म और **(वेषाय)** शुभ गुण तथा विद्याओं की प्राप्ति के लिये **(वाम्)** तुम दोनों को नियुक्त किया गया है।

इस मन्त्र की व्याख्या करते हुये महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं—''मनुष्यों को दो प्रयोजनों में प्रवृत्त होना चाहिये अर्थात् एक तो अत्यन्त पुरुषार्थ और शरीर की आरोग्यता से चक्रवर्ती राज्यलक्ष्मी को प्राप्त करना और दूसरे सब विद्याओं को अच्छी प्रकार पढ़के उनका सर्वत्र प्रचार करना चाहिये।'' ज्ञान और कर्म ये मानव-जीवन के दो पंख हैं जिनके सहयोग से लम्बी दूरी भी सुख से पार की जा सकती है। यजुर्वेद के अन्तिम अध्याय में कहा है—**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः॥** यजु० ४०.२॥ पुरुषार्थ करते हुये ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करे। ज्ञान और कर्म ये दो ही व्रत हैं। ज्ञान ब्राह्मण के लिये और पुरुषार्थ से राज्यादि की प्राप्ति क्षत्रिय के लिये कर्त्तव्य कर्म है। वैश्य इन दोनों को साधन प्राप्त करवाता है। इनका सहयोग करना ही उसका व्रत है। शूद्र बुद्धि-बल में न्यून होने के कारण पूर्वोक्त तीनों के कार्यों में शारीरिक श्रम का सहयोग प्रदान करता है।

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह। तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना॥ यजुः० २०। २५॥

जिस देश में ब्रह्म तेज और क्षात्रबल दोनों कन्धे से कन्धा मिला कर एक साथ प्रीतिपूर्वक व्यवहार करते हैं। जहाँ विद्वान् लोग अग्नि विद्या को जानते हैं वह देश पुण्यशाली होता है।

ज्ञान और कर्म में यद्यपि ज्ञान की ही प्रधानता है। परन्तु उसकी पूर्णता कर्म द्वारा ही होती है इसलिये मन्त्र में कर्म की प्रथम गणना की है। क्योंकि **शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचर्चा प्रवर्तते।** शस्त्रों से सुरक्षित राष्ट्र में ही धर्म और विद्या का प्रचार सम्भव है।

राजा कालस्य कारणम् राज्याधीन ही धर्म, कर्म और अन्य व्यवस्थायें होती हैं। राजा का यह कर्त्तव्य है कि धर्मपूर्वक प्रजा का पालन और न्याय किया जाना चाहिये। जहाँ तक बन सके वहाँ तक बाल्यावस्था में विवाह न करने देवें। ब्रह्मचर्य का यथावत् सेवन करें और करायें। व्यभिचार और बहुविवाह को बन्द करें कि जिससे शरीर और आत्मा में पूर्ण बल सदा रहे। यदि केवल आत्मा का बल अर्थात् विद्या ज्ञान बढाते जायें और शरीर बल न बढावें तो एक ही बलवान् पुरुष सैकड़ों ज्ञानी और विद्वानों को जीत सकता है। और जो केवल शरीर का ही बल बढाया जाये, आत्मा का नहीं तो भी राज्यपालन की उत्तम व्यवस्था बिना विद्या के कभी नहीं हो सकती।

विशेषतः क्षत्रियों को दृढ़ांग और बलयुक्त होना चाहिये क्योंकि जब वे ही विषयासक्त होंगे तो राज्यधर्म ही नष्ट हो जायेगा और इस पर भी ध्यान रखना चाहिये कि 'यथा राजा तथा प्रजा' जैसा राजा होता है वैसी ही उसकी प्रजा होती है। (सत्यार्थप्रकाश, षष्ठ समुल्लास)

कर्म का अभिप्राय यह भी है कि सभी लोग अपने-अपने वर्ण और आश्रमों के कर्त्तव्य कर्मों का पालन करें और सत्याचरण, प्रेम, उदारता एवं यज्ञिय भावना से सभी कर्मों को शास्त्र-मर्यादानुसार करें। कोई भी निठल्ला न रहे। **पापो नृषद्वरोजनः** आलसी मनुष्य पापी है। याद रखें—**पुरुषार्थ ही इस जीवन में सब कामना पूरी करता है। मनचाहा सुख उसने पाया जो आलसी बन के पड़ा न रहा।**

आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य ये तीन उपस्तम्भ हैं जो इस शरीर रूपी भवन को धारण करते हैं। युवावस्था के प्रारम्भ में ही इन तीनों की ओर ध्यान देना चाहिये। व्यायाम इन तीनों को बल प्रदान करता है। व्यायाम से भूख खुल कर लगती है, गाढ़-निद्रा आती है और ब्रह्मचर्य-पालन में सहायता मिलती है। राजा का यह कर्त्तव्य है कि प्रत्येक युवक-युवती अनिवार्य सैनिक शिक्षा प्राप्त करे। विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा को अनिवार्य किया जाये। चरित्र निर्माण शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग है। वासना को बढ़ाने वाले चलचित्र, नृत्य, गीत एवं उच्छृंखलता पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने से ही युवा लोग अनुशासित हो सकेंगे। वेद कहता है—**'सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्'** युवा जन सभ्य और वीर होवें। किसी भी राष्ट्र की शक्ति युवा ही होते हैं इसलिये इस ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

मन्त्र में दूसरी बात कही है—**वेषाय वाम्** विष्लृ-व्याप्तौ से वेष की व्युत्पत्ति है। सभी विद्याओं को पढ़ उनका सर्वत्र प्रचार-प्रसार करना ही इसका अभिप्राय है।

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं, विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।

विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं विद्या राजसु पूज्यते नहि धनं विद्याविहीनः पशुः॥

विद्या से व्यक्ति और अधिक प्रभावशाली बन जाता है, विद्या छिपा हुआ धन है जिसे चोर चुरा नहीं सकते, बन्धु बंटा नहीं सकते और राजा छीन नहीं सकता। अन्य धन व्यय करने पर न्यून हो जाते हैं परन्तु देने से विद्या की वृद्धि ही होती है। विद्या सभी भोगों को देने वाली, यश और सुख करने वाली है। यह गुरुओं का भी गुरु है। विदेश में विद्या बन्धु के समान सहायता करती है। विद्या ही सबसे बड़ी देवता है। विद्या का राजाओं की सभा में सम्मान होता है, धन का नहीं। बिना विद्या के मनुष्य पशु के समान है।

विद्या से अभिप्राय परा और अपरा विद्या से है। लौकिक जीवन को सुखी बनाने के लिये अपरा विद्या—सभी कला-कौशल, कृषि, वाणिज्य और शिल्पकला सीखनी चाहिये और मानव जीवन के अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष प्राप्ति हेतु परा विद्या अर्थात् मुक्ति प्राप्ति के उपाय योग्य गुरु के मार्गदर्शन में जान उनका अभ्यास करना चाहिये। मानव जीवन के ये दो ही कर्त्तव्य कर्म हैं। आज का मानव इनको छोड़ केवल धन कमाने की स्पर्धा में दिन-रात लगा हुआ है और अपने मार्ग को भूल गया है जिसके कारण वह और अधिक अशान्त होता जा रहा है। वेद ऐसे लोगों को सावधान करते हुये कह रहा है कि हे मनुष्यो! परमेश्वर ने तुम्हें ज्ञान, कर्म की प्राप्ति करने के लिये ही मानव का शरीर दिया है, पशुओं के समान उदरपूर्ति के लिये नहीं।

- क्रमशः

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसंधान केन्द्र (वेदाश्रम), कोझीकोड (केरल) सहयोग देने वाले महानुभावों की सूची

1.	Sh. Dharm Pal Arya, Delhi	2,50,000	
2.	Sh. Manoj Gulati, Delhi	2,51,000	
3.	Dr. Radhakrishna Varma, Karnataka Sabha	1,51,000	
4.	Swami Sadanandji, Deenanagar	1,11,000	
5.	Aryasamaj, Kacch, Gujarat & Lakshmanji Vodanand	1,11,111	
6.	Sh. Ashok Gupta, Delhi	1,11,000	
7.	Sh. Prem Arora, Delhi	1,00,000	
8.	Sh. R.R.Singh IPS c/o Shashi Agarwal, Panipat	1,00,000	
9	Sh. Kishanlal, Jodhpur	51,000	
10.	Dr. Brahm Muni, Maharashtra	51,000	
11.	Sh. Rajiv Arya, Aryasamaj, Punjabibag, Pashchim	31,000	
12.	People Came from Panipat	31,000	
13.	Arya Samaj New Moti Nagar	31,000	
14.	Sh. Dharm Dev Khurana, Prashant Vihar	31,000	
15.	Sh. Hari Om Bansal, Delhi, East, c/o Preeti Bansal	21,000	
16.	Prof. Om Prakash Halikar, Latur, Maharashtra	21,000	
17.	Sh. Om Prakash Arya, Keerti Nagar, Delhi	21,000	
18.	Sh. Ravi Sachdeva, Delhi	21000	
19.	Aryasamaj, Janakpuri, 'C' Block, Delhi	11,000	
20.	Sh. Ram Devi Taneja, Punjabibag East, Delhi	11,000	
21.	Sh. Haridutt Sharma, Pradhan, Aryasamaj+Rly Colony, Kota +Prantiya Sabha, Rajasthan	11,000	
22.	Sh. Dalesh Tyagi, Vikaspuri, Delhi	11,000	
23.	Sh. Ranveer Dua, Tilak Nagar, Delhi	11,000	
24.	Smt. Pushpa Pahuja, c/o Vinay Arya	11,000	
25.	Aryasamaj, Model Town, Panippat	11,000	
26.	Sh. Rampal Panchal, Delhi	11,000	
27.	Sh. Raj Kishor Modi, Jharkhand	11,000	
28.	Sh. Hari Bhai Erod	Ati Vishesh Sahyaog	
29.	Dr. Vivek Shenoy (To be collected by their sorces)	10,00,000	
30.	Sh. Jackson Joseph, Kerala	1,11,000	
31.	Sh. Mancheri Narayanan, Kerala	1,00,000	
32.	Sh. Suresh, Kerala	31,000	
33.	Sh. Krishnan N T, Kerala	25,000	
34.	Sh. Satheesh Chandran & Srilatha, Chevayur	21,000	
35.	Sh. Arunesh, Kerala	10,000	

Contd...

इस मद में सहयोग करने वाले दानदाताओं के नाम आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी इसी प्रकार प्रकाशित किए जाएंगे। कृपया अपनी सहयोग राशि "महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद रिसर्च फाउंडेशन" के नाम 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' के पते पर भेजें। इस हेतु दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। आप अधिकाधिक महानुभावों को दान देने के लिए प्रेरित करें। अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी/सहयोग के लिए सभा की ईमेल : aryasabha@yahoo.com पर मेल भेजें। - विनय आर्य, महामन्त्री

वानप्रस्थ व संन्यास धर्म

- स्वामी सौम्यानन्द सरस्वती

मानव जीवन का तीसरा सोपान वानप्रस्थ कहलाता है जब मानव परिवार में अवांछित हो जाता है अर्थात् जब संतानों का अलग-अलग जीवनाधार बन जाता है। ऐसी ईश्वरीय आज्ञा है-

आनयेतमारभस्व सुक्रतां लोकमपि गच्छतु प्रजानन्। तीर्त्वातमांसि बहुधा महान्त्यजो नाकमाक्रमतां तृतीयम्।।

(अथर्व-9-5-1)

पदार्थ- हे गृहस्थ! **(प्रजानन्)** प्रकर्षता से जानता हुआ तू **(एवम्)** इस वानप्रस्थ आश्रम का **(आरभस्व)** आरम्भ कर। **(अनाय)** अपने मन को गृहस्थाश्रम से इधर की ओर ला **(सुक्रताम्)** पुण्यात्माओं के **(लोकमपि)** देखने योग्य वानप्रस्थाश्रम को भी **(गच्छतु)** प्राप्त हो। **(बहुधा)** बहुत प्रकार के **(महान्ति)** बड़े-बड़े **(तमांसि)** अज्ञान तथा दु:खादि संसार के मोहों को **(तीर्त्वा)** तर कर अर्थात् पृथक होकर **(अज्ञ:)** अपने आत्मा को अजर, अमर जान **(तृतीयम्)** तीसरे **(नाकम्)** दु:ख रहित वानप्रस्थाश्रम को **(आक्रमताम्)** आक्रमण कर अर्थात् रीति पूर्वक आरूढ़ हो। (संस्कारविधि)

विवेचना- इस मंत्र में वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण करने वाले को चार शिक्षाएँ दी हैं-

(1) संतानों से त्याज्य होकर अर्थात् गृहस्थ की जिम्मेदारियों से निवृत्त होकर वानप्रस्थ आरम्भ करें।

(2) गृहस्थ के मोह को त्याग पुण्यात्माओं (विरक्तों) से मिले।

(3) सांसारिक दु:खों से पृथक होकर अपने जीवात्मा का उद्धार करे।

(4) दु:ख रहित वानप्रस्थ आश्रम को यथावत् प्राप्त करें।

वास्तव में ये शिक्षाएँ ही वानप्रस्थ की **आचार संहिता** अर्थात धर्म है। इन शिक्षाओं के पालनार्थ वैदिक धर्म ग्रथों का स्वाध्याय और आत्मचिन्तन अति आवश्यक है।

महर्षि दयानन्द ने वानप्रस्थाश्रम के अन्त में लिखा है "सब मित्रों से मिल, पुत्रादिकों पर घर का भार घर के अग्निहोत्र की सामग्री सहित जंगल में जाकर एकान्त में निवास कर योगाभ्यास, शास्त्रों का विचार, महात्माओं का संग करके स्वात्मा और परमात्मा को साक्षात् करने में प्रयत्न किया करें।

परन्तु वर्तमान में जंगल नहीं हैं और एकान्तवास के स्थान भी नहीं है। लेकिन इस कमी को आर्यसमाजें पूरा कर सकती हैं। परन्तु विडम्बना यह है कि आर्य समाजों पर एकाधिकार प्रभावी है। वहाँ वानप्रस्थियों को ठहरने नहीं दिया जाता जो पूर्ण रूपेण अवैदिक परम्परा बन चुकी है।

यदि आर्य समाजें वानप्रस्थियों को निवास करने दें तो वानप्रस्थियों द्वारा अग्निहोत्र, योगाभ्यास, शास्त्रों का अध्ययन और महात्माओं का संग स्वत: ही प्राप्त हो जायेगा और आर्य समाजों की दशा सुधर जायेगी, जनता का लगाव बढ़ जाएगा।

संन्यास धर्म- मानव जीवन का चौथा सोपान संन्यासाश्रम है अर्थात् भौतिक साधनों का पूर्ण त्याग कर विरक्त होकर सब पृथिवी में परोपकारार्थ विचरें अर्थात भ्रमण करें।

वेद में आज्ञा है-

यद्देवा यतयो यथा भुवनान्यपिन्वत्। अत्रा समुद्रे आ गूढ्हा सूर्य्यमजभर्त्तन्।।

मनु0 6-6011

अर्थ - हे **(देवा:)** पूर्ण विद्वान **(यतय:)** संन्यासी लोगों! तुम (यथा) जैसे **(अत्र)** इस **(समुद्रे)** आकाश में **(गूढम्)** गुप्त **(आसूर्य्यम्)** स्वयं प्रकाश रूप सूर्यादि का प्रकाश परमात्मा है, उसको **(आ अजभर्त्तन्)** चारों ओर से अपने आत्माओं में धारण करो और आनन्दित होओ, वैसे **(यत्)** जो **(भुवनानि)** सब भुवन के गृहस्थादि मनुष्य हैं, उनको सदा **(अपिवन्ती)** विद्या और उपदेश से संयुक्त किया करो, यही तुम्हारा परम धर्म है। (संस्कार विधि)

इन्द्रियाणां निरोधेन रागद्वेष क्षयेण च। अहिंसया च भूतानाममृतत्वाय कल्पेत।।

मनु0 6-6011

अर्थ- जो संन्यासी बुरे कामों से इन्द्रियों के निरोध रागद्वेषादि दोषों के क्षय **(नाश)** और निर्वैरता से सब प्राणियों का कल्याण करता है। वह मोक्ष को प्राप्त होता है। *(संस्कार विधि)।*

विवेचना - उक्त मंत्रों में संन्यासियों को चार शिक्षाएँ हैं-

(1) योगाभ्यास से परमात्मा को अपने आत्मा में धारण करना अथवा साक्षात् करना।

(2) गृहस्थादि मनुष्य को विद्या का उपदेश करना।

(3) इन्द्रियों के दोषों का नाश करना।

(4) निर्वैरता से सभी प्राणियों का कल्याण करना।

ये चार शिक्षाएँ ही संन्यासी की आचार संहिता अर्थात् धर्म हैं। वानप्रस्थी व संन्यासी का कोई गोत्र नहीं होता। वह केवल आर्य वानप्रस्थी और आर्य संन्यासी कहलाता है। सरस्वती शब्द ज्ञानी का पर्यायवाची है जिसे लिखना आवश्यक नहीं है।

नाम परिवर्तन-

महर्षि दयानन्द जी ने वानप्रस्थी व संन्यासी के नाम परिवर्तन हेतु कहीं नहीं लिखा है। परन्तु गृहस्थ नाम से पारिवारिक सम्बन्ध रहता है। इस कारण सम्पूर्ण मानव समाज से सम्बन्ध होनें पर नाम का बदलना आवश्यक है जो गृहस्थ त्याग का द्योतक होता है।

वानप्रस्थियों को अपने नाम के बाद मुनि शब्द लगाना चाहिए और संयासियों को नाम के पूर्व स्वामी शब्द लगाना चाहिए।

पहनावा-

वानप्रस्थी जब गृह त्याग करता है तो गृह के वस्त्र भी त्यागने होते हैं। और वन के वस्त्र धारण करने होते हैं। अत: वानप्रस्थी या तो कोपीन धारण कर निर्वस्त्र रहे या पीले वस्त्र धारण करे। यह सामाजिक व्यवस्था है जिससे उसकी अलग पहचान हो सके।

संन्यासी हेतु संस्कार विधि में गेरूवे अथवा कासाय वस्त्र धारण करना लिखा है।

वानप्रस्थ की कोई समयावधि नहीं है यह संन्यास की योग्यता प्राप्त करने की अवधि है। विरक्तता और मानव कल्याण की भावना तथा आत्म शुद्धि की भावना जागृत होने पर संन्यास किसी भी अवस्था से लिया जा सकता है।

नारी अवस्थाएँ-

नारी के लिए वानप्रस्थ या संन्यास ग्रहण करना न तो महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है और न ही वेद में कहीं उल्लेख है। मनुस्मृति में नारी की तीन अवस्थाओं का उल्लेख है:-

(1) बालिकावस्था (2) युवावस्था (3) वृद्धावस्था। जैसे कहा है-

बाल्ये पितुर्वरो तिष्ठेत्पाणिग्राहस्य यौवने। पुत्राणां मतैरि प्रेते न भजेत्स्त्री स्वतन्त्रताम्।।

मनु0 5-148।।

अर्थ- बाल्यावस्था में पिता के, यौवन में पति के, और पति के मरने या गृहस्थ त्यागने पर पुत्रों के अधीन रहे। स्त्री कभी स्वतन्त्र न रहे।

अत: नारी को पुत्रों व सम्बन्धियों के साथ रहकर ही वानप्रस्थ और संन्यास अवस्थाओं को निभाना चाहिए। वानप्रस्थावस्था में नारी को नाम के बाद 'यति' शब्द और संन्यासावस्था में नाम के पूर्व 'विरक्ता, शब्द लिखने चाहिए। नाम परिवर्तन आवश्यक नहीं है क्योंकि नारी को सम्पूर्ण मानव समाज में भ्रमण नहीं करना है। नारी समाज में ही रहना है।

- 116, गाँधीनगर,
मथुरा-271004 (उ०प्र०)
मो0- 9868720739

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

अब आर्यसमाज के गीतों की धुनें रिलाइंस नेटवर्क पर भी

Aai Fauj Dayaanand Wali	"CT 6312073"	Jo Holi So Holi	"CT 6312077"
Hey Prabhu Hum Tumse	"CT 6312074"	Pujniya Prabhu Humaare	"CT 6312078"
Hota Hai Saare Desh Ka	"CT 6312075"	Suno Suno Ae Duniya Waalo	"CT 6312079"
Humko Sab Duniya Jaane	"CT 6312076"	Yun To Kitne Hi Mahapurush	"CT 6312080"

अपने भी अपने रिलाइंस मोबाइल पर यदि आप इन गीतों की धुनों को अपनी कॉलर ट्यून बनाना चाहते हैं तो अपने मोबाइल से गीत का कोड नं. टाइप करके 51234 पर एसएमएस करें। जैसे आप "Aai Fauj Dayaanand Wali" गीत की धुन अपने Relaince मोबाईल पर कॉलर ट्यून बनाना चाहते हैं, तो आप अपने टाइप करें "CT 6312073" और 51234 पर SMS कर दें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाज का वेद विषयक ....

वेदों का है। वेद हमारी प्राचीन पुस्तक है। हमारे ऋषियों की महती कृति है। परन्तु उस समय से लेकर आज तक इतनी उन्नति हो चुकी है कि वेदों की हम पूजा तो कर सकते हैं। उनको सम्मान से याद भी कर सकते है। परन्तु उनके अनुकूल आचरण नही कर सकते। वेदों का मूल्य तो है परन्तु ऐतिहासिक, न कि व्यावहारिक यह पुराने सिक्के है। अद्भुतालय में रखने के योग्य, प्रदर्शनी में प्रदर्शन के योग्य। परन्तु इस योग्य नहीं कि आधुनिक काल में उनको पद प्रदर्शक समझा जा सके। यह है मौलिक भेद पं० जवाहरलाल जी के दृष्टिकोण में और आर्यसमाज के दृष्टिकोण में। और यदि पं० जी की बात ठीक है तो आर्य समाज की नींव ही धड़ाम से नीचे आ गिरती है और ऋषि दयानन्द का किया कराया सब नष्ट हो जाता है। वेदों का ऐतिहासिक मूल्य तो ईसाई और मुसलमान भी मानने के लिए तैयार है। प्रत्येक पुस्तक का ऐतिहासिक मूल्य है, क्योंकि वह अपने युग के विषय में कुछ बताती है। परन्तु इतने से वह धार्मिक पुस्तक नहीं हो सकती। यहां एक प्रश्न उठता है और वह वेदों की आन्तरिक साक्षी पर निर्भर है। क्या वेदों की शिक्षा ऐसी है, जैसे मनुष्य के बचपन की चीज होती है अर्थात् अधूरी और धुंधली। और क्या वेदों के पश्चात् मनुष्य ने वेदों के अतिरिक्त जो कुछ अन्वेषण किया वह अधिक स्पष्ट और अधिक पूर्ण है। क्या यह ज्ञात होता है कि जैसे तेल का मिट्टी का दीपक मनुष्य ने पहले बनाया और अब बिजली के बल्ब बनाये, जो अधिक उपयोगी और अधिक पूर्ण है। इसी प्रकार वेदों में जो सिद्धान्त दिये गये है, वे अपूर्ण और धुंधले है और आजकल जो विकास हुआ है, वह अधिक वैश्विक, अधिक उपयोगी और अधिक स्पष्ट है।

(२) यह बात तो ठीक है कि वेदों का आविर्भाव मानव जाति के बाल्यकाल की चीज है। परन्तु बाल्यकाल का अर्थ क्या? इसके दो अर्थ हो सकते हैं। पहला यह कि जब वेदों का आविर्भाव हुआ तो मानव जाति को उत्पन्न हुए बहुत समय व्यतीत नही हुआ था। सृष्टि के कितने पदार्थ हैं जो मानव जाति के बाल्यकाल में हुए परन्तु वे सर्वथा पूर्ण थे। जैसे सूर्य, चन्द्र, वायु आदि। सूर्य में तत्पश्चात् क्या उत्पत्ति हुई यह कहना कठिन है। दूसरा अर्थ यह है कि मनुष्य ने अपने बाल्यकाल में जो वस्तुएं बनाई वह सर्वथा अविकसित थीं। आरम्भ मात्र थी शनैः शनैः उत्तरोत्तर उन्नति हो ही गई, जैसे कपड़े, मकान, बर्तन इत्यादि। अब प्रश्न यह है कि जब हम कहते है कि वेद मानव जाति के बाल्यकाल की वस्तु है, तो इन दोनों में से हमको कौन-सा अर्थ अभिप्रेत है। यदि वेदों को मनुष्य ने अनुभव-शून्य और अधमतम अवस्था में आरम्भ किया, जैसे बच्चा आरम्भ में पाठशाला में भरती होते समय किया करता है, तो वेदों की भाषा सर्वथा अपूर्ण, वेदों का, शब्दविन्यास सर्वथा संकुचित, वेदों के अलंकार हर प्रकार से भोंडे, वेदों के भाव पूर्णारूपेण अशिक्षित अनुभव शून्य, वेदों के छन्द सर्वथा बेतुके होने चाहिए और वेदों के पश्चात् आने वाली पुस्तकों की भाषा विकसित, भाव परिमार्जित, सिद्धान्त पूर्ण दार्शनिक, युक्तियां सर्वथा विशद्, अलंकार सर्वथा समुन्नत और कोमल होने चाहिएं। वेदों की भाषा और भावों में वर्तमान ग्रन्थों की भाषा और भाव की अपेक्षा उतनी ही कमी होनी चाहिए, जितनी आजकल के वायुयान और पुरानी भैसों की गाड़ी में है। यदि ऐसा है तो हम मान लेंगे कि वेदों का ईश्वरकृत होना गलत है और वेद हमारे पूर्वजो की उस समय की कृति है, जब उन्होंने उन्नति का मार्ग बनाना आरम्भ ही किया था। अभी भूमि खनन ही आरम्भ किया था सीमेण्ट की सड़क की स्वच्छता और सुगमता प्राप्त न थी। यदि ऐसा ठीक है तो यह भी कहना पड़ेगा कि वेद हमारी पूजा के योग्य अवश्य है क्योंकि वे पुराने है, परन्तु वे प्रयोग में लाने के योग्य नही।

और यदि पहला अर्थ है अर्थात् वेदों की भाषा अत्यन्त विशद् भाव समुन्नत और सिद्धान्त विकसित है तो दो बातों में से एक ईश्वरकृत होंगे या जब मानव जाति ने उनको बनाया होगा, उस समय वह पूर्ण विकसित हो चुकी होगी और उससे पूर्व का मानवीय साहित्य वेदों की अपेक्षा प्रारम्भिक और अपूर्ण तथा अविकसित होना चाहिए । आज जो कुछ मैं लिख रहा हूँ, वह विकास की एक नियत अवस्था में प्राप्त हो चुका है। साठ वर्ष पूर्व मै पाठशाला में भरती ही हुआ था और लकड़ी की पट्टी पर लिखता था, उस समय के मेरे अक्षरों और आजकल के अक्षरों में भेद है। परन्तु यदि मेरी कोई पुरानी कापी मिल जाय और उसमें अत्यन्त सुन्दर अक्षर मिले तो यही कहना पड़ेगा कि वह अक्षर मेरे नहीं अपितु किसी अधिक विकसित पुरुष के है।

इस प्रकार वेदों के विषय में तीन सम्भावनायें हो सकती है।

(१) वेद अत्यन्त अपूर्ण और प्रारम्भिक है। इसीलिए पिछली शताब्दी के विद्वान वेदों को गड़रियों के गीत या बच्चों की बिलबिलाहट बताया करते थे।

(२) वेद अत्यन्त विशद्, विकसित और अन्ततः ऐसी अवस्था के है जब मनुष्य जाति पूर्ण विकास को प्राप्त हो चुकी थी। उस दशा में उनका अविकसित या श्रद्धा विकसित साहित्य मिलना चाहिए, जो वेदों से पूर्व था, जिससे पता चल जाए कि वेदों तक पहुंचने से पूर्व मानव जाति के साहित्य को किस-किस अवस्था में होकर गुजरना पड़ा। इसके साथ ही यह भी सिद्ध होना चाहिए कि वैदिक काल के पश्चात् मानवी भाषा और भावों ने इतनी उन्नति और की।

(३) यह कि वेद है तो प्राचीनतम परन्तु इतने विकसित और पूर्ण है कि इनको मानवी कृति कहना ही असंभव है। स्वामी दयानन्द और आर्य समाज की तीसरी पोजीशन है और स्वामी दयानन्द से पूर्व के ऋषि मुनि तथा मध्य कालीन आचार्यो का भी यही मत रहा है। मनुष्य ने उन्नति की है और अनेक विभागों में, परन्तु उसकी कृति वेदों से अब भी उतनी पीछे है जितनी बिजली के लैम्प सूर्य से पीछे है। सूर्य अत्यन्त प्राचीन और अत्यन्त पूर्ण है। आरम्भिक इस लिये है कि सृष्टि के आरम्भ में हुआ। पूर्ण इसलिये है कि मनुष्य ने बनाया नहीं। सूर्य की उत्पत्ति के समय मनुष्य का बाल्यकाल अवश्य था। उसका अनुभव भी शून्य के समान था। परन्तु जो चीज़ उसकी बनाई न थी उसमें पूर्णता थी। विद्यार्थी की कापी पर अध्यापक उसके अनुकरण के लिये जो पहली सुन्दर पक्ति लिख देता है वह प्रारंभिक होते हुए भी पूर्ण होती है क्योंकि प्रारंभिक तो बच्चों की अपेक्षा से है जिस गुरु ने लिखा है उसका बाल्यकाल नही, वह पहले से विकसित हो चुका है। ऋग्वेद ने इस विषय में एक बात लिखी है जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वेद में लिखा है।

"सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्।" (ऋग्वेद मंडल १०)

यह छोटा सा मंत्र है और पूर्ण परिचित। परन्तु इसके महत्त्व पर लोगों ने विचार नही किया। इसका अर्थ यह है कि परमात्मा ने इस कल्प में सूर्य चन्द्र आदि को उसी प्रकार बनाया जैसे पूर्व कल्पों में "यथा पूर्व"। यह विचित्र वाक्य है। इसके अर्थ बड़े विस्तृत है। इससे पता चलता है कि सृष्टि को बनाने वाली कोई नवी, अनुभव-अप्राप्त प्रारंभिक शक्ति नहीं है। वह शक्ति पूर्ण हैं। अत्यन्त पुरानी है। सृष्टि के विषय में यह धारणाभूत, भविष्यत् और वर्तमान तीनों कालों तक जाती है यह अपूर्ण और अविकसित या अर्द्धविकसित भावना नहीं हो सकती। वेद के 'धाता' और "यथा-पूर्व" पर विचार कीजिये, मनुष्य कर्त्ता हो सकता है, परन्तु 'धाता' नही 'धाता' और विधाता का परस्पर सम्बन्ध है वास्तविक विधाता तो धाता ही है जो न केवल सृष्टि को बनाता है अपितु धारण भी करता है।

इस विषय में वेदों के पश्चात् आने वाले साहित्य ने क्या उन्नति की? यह देखना है। वेदों के पश्चात् का साहित्य दो भागों में बंटा है। एक वैदिक और दूसरा अवैदिक। वैदिक साहित्य तो वेदों की ही नकल है।

श्रुतेरिषार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्।

अर्थात् - वेद अपौरुषेय और समस्त ऋषि-कृत साहित्य स्मृति समझा जाता है।

दूसरा अवैदिक। यह वेदों के विरोध में अथवा उपेक्षा में बनाया गया। कुरान बाइबिल आदि में उपर्युक्त मंत्र के भाव से विशद् क्या कोई भाव मिलता है। यदि मिलता है तो क्या? उत्तर कालीन पुस्तकों में इतना ही विशद ज्ञान मिले तो इसको अनुकरण कहेंगे। यदि कम मिले तो कहेंगे कि साहित्य में अवनति आ गई। और यदि इससे बढ़कर कोई विचार है तो कौन सा? जो ऋषि अपनी अन्तरात्मा में सृष्टि के आरम्भकाल में इस भाव को "देख" सके उनकी चक्षु कितनी विचित्र और विकसित रही होगी।

फिर थोड़ा सा भाषा सम्बन्धी बातों पर विचार कीजिये। ध्वनि, शब्द, वाक्य, छन्द इत्यादि अनेक बातें है जिनसे वेदों की विशदता का परिज्ञान हो सकता है। केवल भाषा मात्र में एक बात नही अपितु कई बातें है। संज्ञाओं के रूप, उनके रूपान्तर, क्रियाओं के रूपान्तर इत्यादि। विद्वानों का कहना है कि संस्कृत भाषा संसार की सब भाषाओं में विशदतम है। 'धाता' "अकल्पयत्" इन दो शब्दों में निहित भावों पर विचार कीजिये। सृष्टि का विधाता मेज़ के बनाने वाले बढ़ई के समान नही। बढ़ई विधाता है धाता नही। विधाता भी क्यों कहो। बढ़ई जिस प्रकार मेज़ बनाता है उसमें विधातृत्व अथवा धातृत्व कहां। वह तो बाहरी वस्तु को घड़ देता है। उसका और लकड़ी का बाह्य संपर्क है। कल्पना कीजिए उस मस्तिष्क की विशदता का जिसने सृष्टि-कर्त्ता के लिए विधाता या धाता शब्द का उपयोग किया।

अच्छा! ऋग्वेद के एक और छोटे से वाक्य को लीजिए।

"एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति"

समस्त सृष्टि के 'एकत्व' भाव क्या बच्चों की अनुभव-शून्य अवस्था का भाव है? क्या आज तक दार्शनिकों, वैज्ञानिकों, धर्म-संस्थापकों आदि ने इस से विशद् भाव का आविर्भाव किया? ईश्वर का एकत्व और उसके गुणों और उन गुणों के सूचक शब्दों का बहुत्व। कितनी बड़ी

- शेष पृष्ठ 6 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में

तीन दिवसीय कार्यकर्त्ता गोष्ठी एवं साधारण सभा बैठक : 26-27-28 सितम्बर, 2014

सार्वदेशिक सभा के समस्त साधारण सभा के सदस्यों से अनुरोध है कि उपरोक्त तिथियों को अभी से नोट कर लें तथा अपनी सुविधा के लिए रेलवे आरक्षण आदि अभी से करा लेवें। 25 सितम्बर को रात्रि में ही पहुंच जाएं 26 की प्रातः गोष्ठी आरम्भ हो जाएगी। प्रान्तीय सभा के माध्यम से आने वाले नामों को ही भाग लेने की स्वीकृति दी जा सकेगी। कृपया अपने पहुंचने की सूचना सभा को पत्र अथवा ईमेल- *aryasabha@yahoo.com* द्वारा अवश्य दें ताकि तदनुसार उचित व्यवस्था की जा सके।

आचार्य बलदेव (प्रधान, सार्व.सभा) **प्रकाश आर्य** (मन्त्री, सार्व.सभा) **डॉ. सुरेन्द्र कुमार** (कुलपति, गु. कां, विवि.)

हिन्दी दिवस (14 सितम्बर) पर विशेष

"हिन्दी-दिवस" और हिन्दुस्तान

भारत वर्ष एक ऐसा राष्ट्र है जो विश्व का सबसे बड़ा गणराज्य माना जाता है। और इसे सम्प्रभुत्व सम्पन्न कहा जाता है। तथा विश्व के सबसे बड़े संविधान का गौरव भी प्राप्त है। इसको अन्य कई नामों से भी पुकारा जाता है जिनमें से एक है हिन्दुस्तान, जिसकी भाषा हिन्दी है। और इसकी सनातन आर्य जाति स्वयं को हिन्दु कहने पर गर्व करती है। लेकिन-हाय री! व्यवस्था, आज हिन्दी (आर्य भाषा) अपने सुदिनों की बाट जोह रही है। आज केवल उत्सव मनाने के लिए हिन्दी को पहचाना जा रहा है। भारत के संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। लेकिन कार्यप्रणाली अंग्रेजी में ही चलायमान है जबकि-संविधान में केवल 15 वर्षों के लिए राजकीय औपचारिकताओं को पूरा करने के लिए सहायिका के रुप में ठहराया गया था। लेकिन आज एक सहायिका ने राजरानी पर आधिपत्य जमा अधिष्ठात्री बन बैठी है। और आर्यवर्त्त की आत्मा को तिल-तिल कर जीने के लिए विवश कर दिया गया है। जबकि भारतीय संस्कृति की अपनी एक विशिष्टता है। यहाँ का उत्कृष्ट साहित्य माता, मातृभूमि और मातृभाषा की श्रेष्ठता की कामना करता है। गाँधी जी ने बालक की प्रारम्भिक शिक्षा का वर्णन करते हुए कहा कि- "बालक की प्रारम्भिक शिक्षा उसकी मातृभाषा में ही होनी चाहिए।" महान साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा कि- **निज भाषा उन्नति अहो, सबै उन्नति के मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय के शूल।।**

अर्थात् किसी भी राष्ट्र की तब तक सम्पूर्ण उन्नति नहीं हो सकती जब तक उसमें निज भाषा का पूर्ण विलय न हो। यदि हमें अपने संविधान का सम्मान और रक्षा भी करनी है तो हमें प्रथम हिन्दी की रक्षा भी करनी है। और लार्ड मैकाले की उस घोषणा को असत्य सिद्ध करना होगा कि- "भारतीय सम्पूर्ण ज्ञान भण्डार यूरोप के एक पुस्तकालय के बराबर भी नहीं है।" कहा जाता है कि जापान में तबतक किसी शब्द को प्रयोग नहीं किया जाता जब तक कि उसका रुपान्तरण उनकी अपनी भाषा जापानी में नहीं हो जाता। हम अनेक भौतिक उन्नतियों का अनुसरण तो करते है, बराबरी चाहते है लेकिन मौलिकताओं पर ध्यान नही देते है। वर्तमान में भारत के प्रधानमन्त्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी ने जापान के साथ अनेक विकास के मुद्दों पर समझौते किए जो भारत की दशा एवं दिशा को बदलना चाहते है। वहीं हमें अपने सम्मान अपने राष्ट्र और अपनी भाषा की भी रक्षा करनी है। नई सरकार के गठन के उपरान्त संसद में हिन्दी भाषा व्यवहार लागू करने पर कुछ राजनैतिकों ने विरोध जताया था। लेकिन राष्ट्र के हित में इस प्रकार का विरोधाभास नहीं होना चाहिए, वास्तव में मोदी जी का यह एक सराहनीय कदम रहा है क्योंकि भाषा ही तो जोड़ती है। इसलिए भाषा का सम्मान संरक्षण प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। क्योंकि समृद्ध भाषा से, समृद्ध साहित्य और समृद्ध साहित्य से ही समृद्ध राष्ट्र का निर्माण हो सकता है।

आज नहीं अब से ही हम निश्चय करें कि हमें हिन्दी को ही अपने व्यवहार की भाषा बनाए रखनी है। हम हिन्दी में ही बात करें, हिन्दी में हस्ताक्षर करें, हिन्दी का ही साहित्य पढ़े, पढ़ाएँ तथा हिन्दी में ही अन्य सन्देशों को प्रेषित करें, तभी हिन्दी की रक्षा हो सकती है, और हमारा 'हिन्दी-दिवस' मनाना सफल हो सकता है। क्योंकि हिन्दी ही हिन्द की आत्मा है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

हिन्दी आत्मा हिन्द की लन्दन में है बन्द। स्वतन्त्रता के बाद भी स्वेच्छा से परतन्त्र।।

अर्थात् वर्तमान समय में जो स्थान हिन्दी का होना चाहिए था वह अंग्रेजी को प्राप्त है और स्वतंत्रता के 67 वर्षों के पश्चात् भी हम अपनी भाषा को स्वतंत्र न करा पाए आज भी अंग्रेजों की भाषा उनके नियमों में हम अपनी इच्छा से बंधते जा रहे है, जो भारतवर्ष तथा उसकी भाषा के लिए अच्छा नहीं है यदि अब भी हम चेत जाए तो वह दिन दूर नहीं जब भारत विश्व का शिरोमणी होगा। अत: हमें श्रद्धा से, स्वाभिमान से, तथा पूर्णरूप से हिन्दी को अपना कर इस शुभ दिवस को शुभ-संवत्सर बना देना है, जो वास्तव मे अपेक्षित है।

- पं० प्रद्युम्न आर्य

126वें जन्मदिवस (5 सितम्बर) पर कृतज्ञ राष्ट्र का नमन

डॉ0 राधाकृष्णन को समर्पित शिक्षक दिवस : गुरु उत्सव

सम्पूर्ण भारत वर्ष में स्वतन्त्र भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति एवं द्वितीय राष्ट्रपति के पद को सुशोभित करने वाले एक महान अध्येता एवं दार्शनिक एवं शिक्षक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस को सभी शैक्षणिक संस्थाओं एवं सरकारी एवं अन्य संस्थाओं में शिक्षक-दिवस के रूप में मनाया गया। यह एक शिक्षक के लिए और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि- एक साधारण अध्यापक देश के सर्वोच्च पद को प्राप्त कर सकता है- वे कई भाषाओं के ज्ञाता थे, संस्कृति के समर्थ थे।

जो भारत का विकास उसकी आत्मा में देखना चाहते थे। गाँधी जी के अनुसार भारत की आत्मा उसके गाँव में निवास करती है, वैज्ञानिक वैंकेट रमन ने कहा था कि - "एक दुबले-पतले शरीर में एक दार्शनिक निवास करता है।"

सन् 1955 में भारत सरकार ने उन्हें सर्वोच्च सम्मान "भारत-रत्न" से सम्मानित किया; यह उनके त्याग और कठोर परिश्रम का ही प्रतिफल था।

माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने एक नई परम्परा और नया सन्देश बच्चों को सम्प्रेषित किया और कहा कि - एक शिक्षक देश के भविष्य को तराशता है और किसी भी राष्ट्र के विकास एवं उन्नति में शिक्षक की महान भूमिका होती है। किसी भी व्यक्ति के महान बनने में माता अथवा शिक्षक की भूमिका विशेष होती है। क्योंकि माता तो बालक का प्रथम गुरु होती है।

महर्षि दयानन्द कहते है कि- "गुरु वह है जो शिष्य के अज्ञान अविद्यादि दुर्गुणों को दूर कर विद्यादि शुभ गुणों का समावेश करा देता है।" अत: गुरु की भूमिका हमेशा आदरणीय होती है।

उस परम्परा को देखने का प्रयास कीजिए जहाँ गुरु और शिष्य की उदात्त भावनाएँ प्रकट हो रही है-

सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।। (तौत्तिरीय उपनिषद्)

शिष्य अपने आचार्य के अन्त:पुर (हृदय) में वास करता है और दोनों कह उठते है कि - हे प्रभु! हमारा वार्तालाप, खाना-पीना, बल सम्पादन करना, साथ-साथ होता रहे (अथवा करें) अध्ययन-अध्यापन के द्वारा जो विद्या ग्रहण की जा रही है वह फलीभूत हो, तेजस्वी हो अर्थात् संसार का कल्याण करने वाली हो। हम गुरुओं का सम्मान करें, माता-पिता, वृद्धों और अतिथि महानुभाव की सेवा करें यह भी शिक्षक दिवस का एक अंग है। आज वृहद् वेदना का विषय है कि -राष्ट्र की वर्तमान पीढ़ी के गुरु-शिष्य परम्परा में सुखद व्यवहार नही है। आज भारत का युवक पाश्चात्य सभ्यता की धारा में ऐसा बह गया कि उसे नैतिकता का परिज्ञान ही न रहा। केवल औपचारिकता वश व्यवहार करता है। आज शिष्य के हाथ गुरु के लहू में सने हैं। और अध्यापक भी अपनी मर्यादा को तार-तार कर रहा है। यह उल्लेख करने की आवश्यकता नही। यदि अभी भी हम नही सम्भले तो इसके परिणाम और भयंकर हो सकते है।

इसलिए हमें अपने ऋषियों की उस परम्परा का अनुपालन करना है जिन्हें धौम्य और आरुणि जैसे गुरु-शिष्यों ने आदर्श रूप में प्रसारित किया था। तभी हमारे लिए "शिक्षक-दिवस" का यह पर्व आदर्श और सार्थक सिद्ध हो सकता है।

कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से डॉ. सर्वपल्ली राधा कृष्णन जी को नमन्।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर-बैंकॉक

सिंगापुर 1 -2 नवम्बर एवं बैंकाक 8 -9 नवम्बर 2014

सम्पूर्ण विश्व से अधिक स अधिक आर्यजना भाग लें

आपको विदित ही है कि **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली** के तत्त्वावधान में इस वर्ष **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर-थाईलैंड - 1 तथा 2 नवम्बर 2014 को सिंगापुर** में तथा **8 और 9 नवम्बर 2014 को बैंकॉक** में सम्पन्न होने जा रहा है। सम्पूर्ण विश्व के आर्यजनों से अनुरोध है कि इस महासम्मेलन में अधिकाधिक संख्या में पधारकर संगठन शक्ति का परिचय दें। भारतवर्ष से जो आर्यजन इस सम्मेलन में भाग लेना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के माध्यम से ही भाग ले सकते हैं। **सार्वदेशिक सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही सिंगापुर तथा बैंकॉक की आर्यसमाजें अपने यहाँ प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था करेंगी।** अधिक जानकारी के लिए **www.thearyasamaj.org** पर लॉगऑन करें। - ***संयोजक***

आर्यसमाज को संगठनबद्ध करने तथा वर्तमान परिस्थितियों में आर्यसमाज के कार्यों को गति देने हेतु

क्षेत्रीय विचार गोष्ठियाँ : उ.प. एवं ग्रामीण दिल्ली की गोष्ठी सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की गत अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 3 अगस्त, 2014 में लिए गए निर्णय के अनुसार दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्त्ताओं को आर्यसमाज के कार्य, गतिविधियों, संगठन सम्बन्धी जानकारी देने के उद्देश्य से विभिन्न क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। बैठक मे लिए गए निर्णय के अनुसार उत्तरी दिल्ली में एक, उत्तर-पश्चिम में एक, पश्चिम दिल्ली में दो, दक्षिण दिल्ली में दो, पूर्वी दिल्ली में एक तथा मध्य दिल्ली में भी एक बैठक आयोजित की जाएंगी।आर्यसमाजों के समस्त अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं सदस्यों से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्रानुसार बैठक में अवश्य ही पधारकर संगठन शक्ति का परिचय दें। बैठक का दिन, समय, स्थान एवं संयोजक निम्न प्रकार निश्चित किए गए हैं। समस्त उपस्थित सदस्यों के लिए सायंकालीन भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से की जाएगी। - **विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. 9958174441**

पूर्वी दिल्ली क्षेत्र	मध्य दिल्ली	पश्चिमी दिल्ली -1	पश्चिमी दिल्ली -2	दक्षिण दिल्ली
आर्यसमाज प्रीत विहार	आर्यसमाज हनुमान रोड	आर्यसमाज कीर्ति नगर	आर्यसमाज जनकपुरी सी-3	आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1
14 सितम्बर, 2014 (रवि)	21 सितम्बर, 2014 (रवि)	5 अक्तूबर, 2014 (रवि)	12 अक्तूबर, 2014 (रवि)	26 अक्तूबर, 2014 (रवि)
दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे	प्रात: 10:30 से 2:30 बजे	दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे	दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे	दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री सुरेन्द्र रैली	**संयोजक : श्री अरुण वर्मा**	**संयोजक : श्री ओम प्रकाश आर्य**	**संयोजक : श्री शिव कुमार मदान**	**संयोजक : श्री राजीव चौधरी**
मो. 9810855695	मो. 9540086759	मो. 9540077858	मो. 9310474979	मो. 9810014097

एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन उपलब्ध

सभा द्वारा संचालित एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन की सेवाएं भी इस अवसर पर प्रचारार्थ उपलब्ध रहेंगी। वेद प्रचार मंडलों से निवेदन है कि वेद प्रचार वाहन अपने यहां मंगवाकर प्रचार कार्य करें। प्रचार वाहन मंगाने हेतु श्री एस.पी. सिंह (9540040324) से सम्पर्क करें।

पूर्वी दिल्ली की आर्यसमाजें कृपया ध्यान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। इस शृंखला में पूर्वी दिल्ली की आर्यसमाजों की गोष्ठी भूलवश 13 सितम्बर लिख ी गई थी। कृपया इसे सुधारकर रविवार 14 सितम्बर पढ़ा जाए। स्थान एवं समय पूर्ववत् रहेंगे। कृपया गोष्ठी में अवश्य ही पधारकर सहयोग करें - ***सुरेन्द्र रैली, संयोजक***

पृष्ठ 4 का शेष

बात है। "विप्रा बहुधा वदन्ति" की मनोवैज्ञानिक महत्ता पर विचार कीजिये। मानवी मस्तिष्क की प्रगतियों की भिन्नता को देखिये। "विचित्र-रूपा: खलु चित्तवृत्तय:"। संसार की वस्तुओं को देखते समय मनुष्य की भावनाओं में कितनी विभिन्नता होती है और उस विभिन्नता से प्रेरित होकर उसके शब्दों में कितनी विभिन्नता आ जाती है। परन्तु उस समस्त विभिन्नता के पीछे सत्यता की एकता कैसी छिपी है। सत्य एक है। शब्द अनेक हैं। ईश्वर एक और उसके सूचक शब्द अनेक। वेदों के पश्चात् उन की प्रतिद्वन्द्विता में अनेक सिद्धान्त और मतों की स्थापना हुई परन्तु क्या किसी संस्थापक ने इस से अच्छा कोई विचार पेश किया। कई नवीन धर्म इस बात का दावा करते है कि उन्होंने एक ईश्वरवाद की स्थापना की। यह संभव है कि अनेक-ईश्वर-वाद के प्रचार की अवस्था में उन्होंने कुछ सुधार किया हो परन्तु ईश्वर का जो स्वयं स्वरूप वेदों ने अति प्राचीन काल में रक्खा वह पीछे के मतों में दृष्टिगोचर नहीं होता।

समाजवाद का सबसे अच्छा सिद्धान्तवर्णाश्रम धर्म है। यह समाज-सिद्धान्त सूर्य की भाँति प्राचीनतम है और सूर्य के समान ही पूर्ण । इसमें पीछे से अवनति तो हुई परन्तु उन्नति नहीं हुई। आधुनिक साम्यवाद पूंजीवाद की अपेक्षा उत्कृष्ट हो सकता है परन्तु यह न टिकाऊ है न सर्वोत्कृष्ट। मानवजाति के अनेक व्यक्ति जब स्वभाव से ही सम नही तो उनका जीवन का पुरोगम समान कैसे हो सकता है? कहीं न कहीं तो भेद करना ही पड़ेगा। यह भेद गुण कर्म स्वाभावनुसार ही अत्यन्त नैसर्गिक और कल्याणप्रद हो सकता है।

इस प्रकार जीवन के अनेकानेक सिद्धान्त है जिनका वेदोक्त रूप ही पूर्णतम कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए एक बात पर विचार कीजिए।

समाज की नीव है विवाह व्यवस्था। वेदों में विवाह की एक पति भाव और एक पत्नी भाव की जो व्यवस्था है उससे अच्छी कोई व्यवस्था नहीं है।

इहैव स्त मा वियाष्ट विश्वमायु व्यश्नुतम्। क्राड़न्ता पुत्रेनप्तृभिमोदमानो स्वे गृह।। (ऋग्वेद १०)

इस में दाम्पत्य भाव का कितना उच्चतम चित्रण है। स्त्री, पुरुष घर में साथ रहें। कभी अलग न हों, पुत्रों और पौत्रों के साथ आनन्द से रहे। वैदिक काल के पश्चात् विवाह व्यवस्था में जो जो और जहाँ जहाँ परिवर्तन हुए उन्होंने समाज में आपत्तियाँ तो उत्पन्न कर दीं। उन से समाज की बुराइयाँ दूर नहीं हुई। आज कल वैज्ञानिक युग में विवाह में जो सुधार हो रहे हैं उन से विवाह-व्यवस्था की जड़ ही कट रही है। अमीर लोग धोखे में हैं वे समझते हैं कि दाम्पत्य दासता को दूर करने से वह सुखी हो जायेंगे परन्तु वे यह नही देखते कि जिस समाज रूपी वृक्ष को वह सींचना चाहते हैं उसी की जड़ कट रही है। आज कल प्रत्येक युवक पति तो बनना चाहता है परन्तु उसको पिता बनना स्वीकार नहीं। प्रत्येक युवती को माता और जननी बनने से घृणा है। वह कर्त्तव्य की मर्यादा को दासता की बेड़ी समझ कर तोड़ना चाहती है। क्या यह वैदिक सिद्धान्तों के ऊपर सुधार है या बिगाड़। इसी प्रकार एक और बात लीजिये। कहते हैं कि वैदिक काल में मनुष्य जंगली थे। रहे होंगे। हमको आक्षेप नहीं। सृष्टि के आरंभ में जंगल बहुत थे ऋषि लोग जंगलों में ही रहते होंगे। भवन निर्माण की व्यवस्था पीछे से हुई होगी जब कि वैदिक ज्ञान को कार्य में परिणत किया होगा। परन्तु जंगल में रहना पाप नहीं। जंगली कानून (Law of Jungle) को बरतना पाप है। आज उच्च और गगन चुम्बी भवनों के रहने वाले भेडियों और चीतों की तरह एक दूसरे के रक्त के प्यासे रहते हैं। वेद के आदर्श को देखिये।

अन्योऽन्यमभिहर्यत वत्स ज्ञातमिवा घन्या"। अथर्व वेद ३।३०।१

इस प्रकार एक दूसरे के साथ व्यवहार करो जैसे गाय अपने नवजात बच्चे के साथ करती है। इतना उच्च आदर्श मानव जाति के शैशव काल में कैसे स्थापित हो सकता है जब तक कोई पूर्ण शक्ति उनका नेतृत्व न करे। और यदि वैदिक आदर्श इतना उच्च हो सकता है तो सृष्टि के आरंभ से उसका होना उस के ईश्वर कृत होने का अकाट्य प्रमाण है।

यह संभव है कि आर्य जाति समय-समय पर इस आदर्श से गिर गई हो और उसने सन्मार्ग को छोड़ कर ठोकरें खाई हो परन्तु यह तो होगा मनुष्यों का दोष, उनकी निर्बलता, उनका स्वार्थ। इस में वेदों का तो कोई दोष नहीं। श्री पं० जवाहरलाल जी ने शिकायत की है कि आर्य समाज और स्वामी दयानन्द उन सिद्धान्तों का परित्याग करना चाहते है जो सुधार के रूप में वेदों के पश्चात् हिन्दू सुधारकों की ओर से किये गये। परन्तु यदि विचार किया जाये तो प्रतीत होगा कि वह वैदिक सिद्धान्तों को उन्नति-शील नही अपितु अवनति-शील बनाते हैं। उदाहरण के लिए श्री शंकर स्वामी ने अद्वैतवाद का प्रतिपादन किया। लोग समझते हैं कि वैदिक सिद्धान्तों का यह सुधार है। बौद्ध मत का खंडन करने के लिये संभव है यह कुछ लाभदायक ठहरा हो परन्तु इस सिद्धान्त ने वैदिक धर्म की सजीवता नष्ट करके मायावाद का प्रचार कर दिया जो वैदिक ऋषियों को कभी अभीष्ट न था। इसी प्रकार हिन्दू जाति ने वैदिक धर्म की प्राचीन शुद्धता को छोड़ कर अनेक नवीन बातें मिला दी। जिन के कारण आज सनातन धर्म चूं चू का मुरब्बा हो गया है यह सुधार नहीं अपितु बिगाड़ है। इसीलिये स्वामी दयानन्द ने कहा था कि **"वेदो की ओर लौटो" (Back to the Vedas)**। क्यों? इस लिये कि सन्मार्ग छोड़ आये। सीधा रास्ता पीछे रह गया, किस ओर चल रहे हो वह अभीष्ट स्थान पर पहुंचाने वाला नही अपितु दूर ले जाने वाला है। लौटो !! जितनी जल्दी लौटोगे उतना ही अच्छे रहोगे। जिस मार्ग पर चल रहे हो उस पर एक कदम आगे बढ़ाना ही निर्दिष्ट स्थान से दूर होना है

साभार : सार्वदेशिक (मई, 1947)

आवश्यकता है

आर्यसमाज का इतिहास जब तक लिखा जा चुका है उससे आगे आर्यसमाज का इतिहास लेखन का कार्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा आरम्भ किया जा रहा है। जो वैदिक विद्वान पूरी लगन एवं दृढ़ता से इतिहास लिखने की इच्छा रखते हों वे पत्र लिखकर सम्पर्क करें। उचित दक्षिणा एवं सहायक व्यवस्था प्रदान की जाएगी।

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

आशुलिपिक चाहिए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय के लिए एक हिन्दी आशुलिपिक की आवश्यकता है। आवेदक को डीटीपी कार्य के साथ-साथ अंग्रेजी टाइपिंग का भी ज्ञान होना अनिवार्य है। आर्यसमाज/गुरुकुल की पृष्ठभूमि के आवेदकों को वरीयता दी जाएगी। वेतन योग्यतानुसार। अपने आवेदन निम्न पते पर भेजें या ईमेल करें-

महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
aryasabha@yahoo.com

आर्यसमाज रोहतास नगर का

48वां श्रावणी पर्व महोत्सव

18 से 21 सितम्बर, 2014

यज्ञ भजन प्रवचन : प्रातः 6:45 से 9 बजे
प्रवचन : पं. ध्रुव कुमार शास्त्री
भजन : पं. भानु प्रकाश शास्त्री
पूर्णाहुति एवं समापन : 21 सितम्बर,14
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– सुखबीर सिंह त्यागी, मन्त्री

आर्यसमाज कीर्ति नगर में

श्रावणी पर्व व जन्माष्टमी

पूणाहुति एव सम्मेलन : 14 सितम्बर
यज्ञ : प्रातः 8:15 से 10:15 बजे
ब्रह्मा : डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री
भजन : श्रीमती सुदेश आर्या
आर्य सम्मेलन : प्रातः11:15 बजे से
मुख्य वक्ता : डॉ. महेश विद्यालंकार
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– सतीश चड्ढा, मन्त्री

आर्यसमाज दयानन्द विहार में

11000 गायत्री महायज्ञ

17 से 21 सितम्बर, 2014

प्रतिदिन प्रातः 7:30 से 9:30 बजे
भजन–प्रवचन : सुश्री सविता आर्या जी
श्री बच्चू सिंह जी आर्य
आर्य बाल सम्मेलन – 20 सितम्बर
समापन समारोह – 21 सितम्बर
प्रातः 10 से 1:30 बजे
अध्यक्षता : श्री हरीश कथूरिया
मुख्य अतिथि : महाशय धर्मपाल जी
आमन्त्रित वक्ता : डॉ. महेश विद्यालंकार
सुश्री सविता आर्या, आचार्य धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य। आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– ईश नारंग, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज पीतमपुरा मौर्य एन्कलेव, दिल्ली–34

प्रधान	:	श्री व्रतपाल भगत
मन्त्री	:	श्री सोहनलाल आर्य
कोषाध्यक्ष	:	श्री राकेश ठुकराल

आर्यसमाज यमुना विहार का

वेद प्रचार सप्ताह

समापन समारोह 14 सितम्बर, 2014
भजन : श्री श्याम सुन्दर मेहता
प्रवचन : सुश्री अंजली आर्या
भजन–प्रवचन : प्रातः 8:15 से 9:30

– विश्वास वर्मा, मन्त्री

आर्यसमाज एजीसीआर एन्कलेव

यज्ञ–प्रवचन एवं वेद कथा

14 से 16 सितम्बर

प्रातः 7:30 से 9:30 सायं 3 से 6 बजे
भजन–प्रवचन : सुश्री सविता आर्या जी
श्री बच्चू सिंह जी आर्य
स्थान : 243 एजीसीआर एन्कलेव
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– आर्य डॉ. ओ. पी. भटनागर, मन्त्री

आर्यसमाज रामकृष्ण पुरम् सै.3
एवं डी.डी.ए.फ्लैट्स मुनीरका का

वेद प्रचार समारोह

25 से 28 सितम्बर, 2014

यज्ञ : प्रातः 8:30 से 10:30 बजे
ब्रह्मा : श्री दिनशे शास्त्री
प्रवचन : डॉ. ब्रह्मदत्त जी (कोलकाता)
भजन : श्रीमती अलका जी
यज्ञ–प्रवचन : सायं 6 से 8:30 बजे
पूर्णाहुति एवं समापन : 28 सितम्बर,14
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– सत्य प्रकाश आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश–2 में

श्रावणी पर्व सम्पन्न

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–2 नई दिल्ली के श्रावणी पर्व के अवसर पर आचार्य राजसिंह आर्य जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ, भक्ति संगीत एवं वेदकथा का आयोजन 25 से 31 अगस्त तक बड़े धूम–धाम से किया गया। आचार्य राजसिंह आर्य जी ने इस अवसर पर यज्ञ से स्वर्ग और उपासना से मोक्ष की प्राप्ति का सरल, सरस हृदयग्राही उपदेश देकर सबको अह्लादित किया– ***सहदेव नांगिया, मन्त्री***

आवश्यकता है

सार्वदेशिक सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत आसाम, नागालैंड तथा मध्य प्रदेश के झाबुआ जिलान्तर्गत संचालित महाशय धर्मपाल एमडीएच दयानन्द आर्य विद्या निकेतन विद्यालयों को संचालित करने के लिए सेवाभावी, निष्ठावान, प्रबन्धकों की आवश्यकता है। गृहस्थियों/वानप्रस्थियों/गुरुकुल से निकले ब्रह्मचारियों/संस्कृत पृष्ठभूमि के आवेदकों, जिनमें जो प्रबन्धन कार्य करने की क्षमताएं एवं योग्यता रखने वालों को वरीयता दी जाएगी। आवास व्यवस्था एवं योग्यतानुसार उचित मानदेय प्रदान किया जाएगा। इच्छुक उम्मीदवार अपने बायोडाटा भेजें –

aryasabha@yahoo.com

प्राचार्य/शिक्षकों की आवश्यकता

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर, जिला– जालन्धर (पंजाब) – 144801 में संस्कृत व्याकरण, वेद एवं दर्शन के अध्यापन हेतु आवासीय शिक्षकों के लिए प्रस्ताव आमन्त्रित हैं। ऐसे व्यक्ति जो विद्यार्थियों के लिए जीवन का आदर्श प्रस्तुत कर प्रेरणा दे सकें तथा ब्रह्मचारियों के व्यक्तित्व निर्माण में रूचि रखते हों को अधिमान दिया जाएगा। प्रार्थी अपने शैक्षिक विवरण के साथ अपना मोबाइल नं. भी लिखकर भेजें। मानदेय योग्यता अनुरुप तथा आवास एवं भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से निःशुल्क होगी। *– ध्रुव कुमार मित्तल, प्रधान (9888764311)*

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में

10वां आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन

23 नवम्बर, 2014 : आर्यसमाज आणंद (गुजरात)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से 10वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन **23 नवम्बर, 2014 को आर्यसमाज आणंद, जिला आणंद (गुजरात)** में आयोजित किया जाएगा। जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www. thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1'** के पते पर भेज दें। जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र **3 नवम्बर, 2014** तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक–युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। **सम्मेलन के आयोजन के दिन भी तत्काल पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध होगी।** तत्काल पंजीकरण कराने वाले आर्य युवक–युवतियों के नाम एवं विवरण सभा की वैबसाइट पर 10 दिसम्बर, 2014 के बाद देखे जा सकेंगे।

विशेष : 9वां परिचय सम्मेलन 28 सितम्बर, 2014 को आर्यसमाज मल्हार गंज इन्दौर (मध्य प्रदेश) में आयोजित किया जा रहा है। इसके लिए भी तत्काल पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध रहेगी। इसमें तत्काल पंजीकरण कराने वाले आर्य युवक–युवतियों के नाम एवं विवरण सभा की वैबसाइट पर 10 अक्तूबर, 2014 के बाद देखे जा सकेंगे।

– श्री अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)

दिल्ली सभा कार्यालय निर्माण हेतु सहयोग की अपील

आपको विदित ही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के सभी आर्य समाजों के सुचारु रुप से संचालन की व्यवस्था, साहित्य सृजन एवं उनके प्रकाशन की व्यवस्था तथा पत्र–पत्रिकाओं के सम्पादन की व्यवस्था करती है। सभा का कार्य दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है। अतः सभा में कर्मचारियों के कार्य करने के लिए स्थान की कमी को देखते हुए सभा कार्यालय के विस्तार का कार्य प्रारम्भ किया गया है जिससे सभी कर्मचारियों के कार्य करने के लिए उपयुक्त (पर्याप्त) स्थान हो।

अतः दानवीर महानुभावों से अपील की जाती है कि– निमार्ण कार्य के यज्ञ में दानरुपी आहुति अवश्य प्रदान करें, जिससे यह निमार्ण कार्य शीघ्रता से पूर्ण हो और सभा के कार्यों में व्यवधान न आए। दानवीर व्यक्ति का ही यश बढ़ता है। कृपया अपनी दानराशि चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनिआर्डर द्वारा **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **'15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001'** के पते पर भेजें। **सभा को दिया गया समस्त दान आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।** *– विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441*

शोक समाचार

श्रीमती हर्ष मुंजाल का निधन

वृहद आर्यसमाज के वरिष्ठ सदस्य, उद्योगपति, हीरो होण्डा परिवार के सदस्य एवं मुंजाल शोवा लिमि. के चेयरमैन श्री योगेश मुंजाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती हर्ष मुंजाल जी का 3 सितम्बर, 2014 को आकस्मिक निधन हो गया। वे कुछ समय से अस्वस्थ चल रही थी। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का 6 सितम्बर, 2014 को सायं 3 से 6 बजे तक को मार्कण्डेय भवन, छतरपुर नई दिल्ली में सम्पन्न हुई जिसमें मुजाल परिवार के समस्त सदस्यों, उद्योगजगत तथा अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों के साथ–साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य, व. उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान, महामन्त्री श्री विनय आर्य एवं श्री एस. पी. सिंह सहित सैंकड़ो आर्यजनों ने पहुंचकर दिवंगत आत्मा को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

भजनोपदेशक बेग राज आर्य नहीं रहे

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक महाशय बेगराज सिंह आर्य जी का गत दिनों आकस्मिक निधन हो गया। वे एक भजनोपदेशक, कथावाचक एवं आर्यसमाज के सजग प्रहरी थे। वेद प्रचार ही उनका लक्ष्य था।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 8 सितम्बर, 2014 से रविवार 14 सितम्बर, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 11/12 सितम्बर, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 10 सितम्बर, 2014

प्रथम पृष्ठ का शेष

पित्रादिसदृश्यों मात्रादय: सेव्या:।
(पंच महायज्ञ विधि)

पित्रादिकों के समान विद्यास्वभाव वाली स्त्रियों की भी अत्यन्त सेवा करनी चाहिए।

ऋषिवर ने पितृयज्ञ का महान आदर्श प्रस्तुत किया उससे सभी निकृष्ट परम्पराएँ प्रत्येक मनुष्य को त्यागने योग्य है परन्तु इसका प्रतिफल तो कुछ ओर ही रहा है। मुझे शंका होती है कि– **इस धारा में कहीं हम भी तो नहीं बह रहे है?**

यह आर्य जाति के लिए एक ज्वलन्त प्रश्न भी है। कहीं दूसरे की थाली में खीर देखकर हमारा मन तो नहीं ललचाया? अथवा हमें स्वयं की त्रुटियाँ दिखाई नहीं देती केवल दूसरों में दोष देखते हैं। यदि ऐसा है तो समझ लीजिए की एक बड़ा शत्रु हमारे भीतर ही छिपा बैठा है। कि हम मन की उन संकीर्णताओं को दूर नही कर सके, जिसके लिए ऋषिवर ने गुरु के एक आदेश पर सर्वस्व बलिदान कर दिया।

इसी बात का खेद है कि आज भी कुछ परिवारों में दो किस्तियों में पैर रख चलने का प्रयास किया जा रहा है। जो श्रेष्ठ नही है। यही कारण है कि आर्य समाज की उन्नति की गति मन्द हो रही है।

अत: हमें दृढ़ता पूर्वक ऋषि के मन्तव्यों का पालन करना होगा यह प्रतिज्ञा आज ही करनी होगी। तभी तो आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचार, प्रसार होगा तभी हम तर्पण और श्राद्ध की वास्तविकता को समझेंगे, और उसकी सार्थकता को सिद्ध कर पाएँगे। जिससे राष्ट्र में ज्ञान की निर्मल धारा बहेगी, स्वर्ग आएँगा। हमारा तर्पण और श्राद्ध सफल होगा।

इसका सबसे बड़ा उत्तरदायित्व विद्वानों पर है, क्योंकि कुछ विद्वान् अच्छी दक्षिणा और खातिरदारी के सन्दर्भ में श्राद्ध जैसी क्रियाओं को स्वीकार कर लेते हैं, जहां एक आदर्शवाद अपना दम तोड़ देता है जैसाकि विदित हो कि– अर्थ भेद अज्ञानता में एक स्वार्थी मनुष्य अपना ही नहीं समाज के पतन का कारण बन जाता है। बहुत सी आधार हीन परम्पराओं में से एक है **'तर्पण और श्राद्ध'** यह क्रियाकलाप भी धर्म की चादर ओढ़कर बैठे पूजारी अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए अपनी आजीविका से जोड़ बैठे जिसका परिणाम समाज के लिए बड़ा घातक सिद्ध हुआ।

अत: विद्वानों, पुरोहितों एवं आर्य समाज के पदाधिकारी एवं सदस्यों को विशेष रुप से स्वयं पर नियन्त्रण रख इस प्रवाह को रोकना है। और अपने माता–पिता अतिथियों एवं वृद्धों की सेवा में निरन्तर तत्पर रहकर उन्हे श्रद्धा पूर्वक अपनी सेवा से संतुष्ट करें श्रेष्ठ परम्पराओं को बढ़ाएं तभी हमारा तर्पण और श्राद्ध का वास्तविक उद्देश्य पूरा होगा। न कि मात्र 15 दिनों के लिए ही यह कर्म किया जाए। क्योंकि यह तो मनुष्य का जीवन पर्यन्त कर्तव्य है और यही वेद का आदर्श है। जब हम दृढ़तापूर्वक इन आर्दशों का पालन करेंगे तभी तो एक सरल, सुन्दर और वैदिक परम्परा बनेगी यदि हम आर्य होकर स्वयं ही इन सामाजिक श्रेष्ठ नीतियों का पालन नहीं करेंगे तो फिर कौन करेगा?

प्रतिष्ठा में,

कैसे ये रूढ़ि परम्पराएं बदलेगी। इसलिए पहल तो करनी ही होगी हमें ही आगे आना होगा 'तर्पण और श्राद्ध' केवल 15 दिनों के लिए ही नहीं हमारे जीवन का दैनिक भाग बन जाएं, ज्येष्ठों का आशीष और अनुजों का प्रेम बनकर एक धारा बहने लगें। घर स्वर्ग बन जाएं बस यही तो चाहिए।

अत: सामाजिक सभी परम्पराओं को वास्तविक एवं वेदोक्तरुप से ही मनाना अभीष्ट है। **–सम्पादक**

आर्यसमाज पंखा रोड जनकपुरी में

वैदिक प्रवचन

22–24 सितम्बर, 2014

आचार्य ज्ञानेश्वर जी

प्रात: 7 से 8 बजे (23–24 को)

सायं : 6:30–7:30बजे (22–23 को)

2–4 अक्तूबर, 2014

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

प्रात: 7:30 से 8:30 बजे

सायं : 5:30–6:30बजे

आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– अजय तनेजा, मन्त्री

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह